TB & HIV
TWO DISEASES IN DEADLY PARTNERSHIP
Design: Raffaele Teo.
TB causes more deaths in people living with HIV worldwide than any other illness. And it's increasing in the UK.
Anyone can catch TB, but you could be 100 times more likely to develop TB disease if you are HIV positive.
TB is curable with a completed course of treatment.
Be alert to the symptoms: Fever, Weight-loss, Cough, Night Sweats.
If you think you may have TB, ask about testing at your HIV clinic.
For further information visit: www.ukcoalition.org/tb
UKC
UK Coalition of People Living with HIV and AIDS
250 Kennington Lane, London SE11 5RD
Tel 020 7564 2180 Charity number 1081309
This project has been funded by the Department of Health

2

बुनियादी तत्व

क्या एचआईवी और एड्स एक ही है?

नहीं, ये जुड़े हुए हैं, लेकिन दोनों शब्दों को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग नहीं किया जा सकता।

एचआईवी क्या है?

एचआईवी का अर्थ है ह्यूमन इम्यूनोडिफिशन्सि वाइरस। एचआईवी ऐसा वाइरस है जिससे एड्स होता है। एचआईवी संक्रमण होने का अर्थ यह नहीं है कि व्यक्ति को एड्स है या वह बीमार है।

एड्स क्या है?

एड्स, या एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिशन्सि सिन्ड्रोम, एक नैदानिक (क्लिनिकल) अवस्था है जो एचआईवी के लम्बे संक्रमण का परिणाम है। एड्स लक्षणों के समूह का नाम है, यह एचआईवी द्वारा प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यूनो डिफिशन्सि) के क्षतिग्रस्त होने के कारण होता है। एचआईवी शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को लगातार कमज़ोर बनाता रहता है, जब तक उसकी संक्रमणों से लड़ने की शक्ति बिल्कुल खत्म नहीं हो जाती, और मामूली सा संक्रमण भी ठीक नहीं होता ।

क्या एचआईवी से एड्स होता है?

वैज्ञानिकों को कहना है कि यदि वाइरस का गुणन दवा से ना रोका जाए तो एचआईवी लगभग निश्चित रूप से एड्स की ओर ले जाता है। यह भी एक कारण है कि एचआईवी/एड्स शब्द साथ में प्रयोग किया जाता है – दोनों बहुत मज़बूती से जुड़े हुए हैं।

क्या एड्स एक बीमारी है?

नहीं, एड्स बीमारी नहीं है। यह एक लक्षण–समूह है (बीमारियों का समूह)। एड्स से ग्रसित लोग इसलिए मर जाते हैं, क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली अब अवसरवादी संक्रमणों जैसे कि कैंसर, मलेरिया या तपेदिक से ठीक तरह से लड़ नहीं पाती। कोशिकीय प्रतिरक्षा कमी वाले लोग उन संक्रमणों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं जो अन्यथा विरले ही होते है, इसमें दुर्लभ निमोनिया, मैनिनजाइटिस, तपेदिक, परिसर्प (हरपीज़) और कापोसीस सरकोमा जैसे कैंसर शामिल हैं।

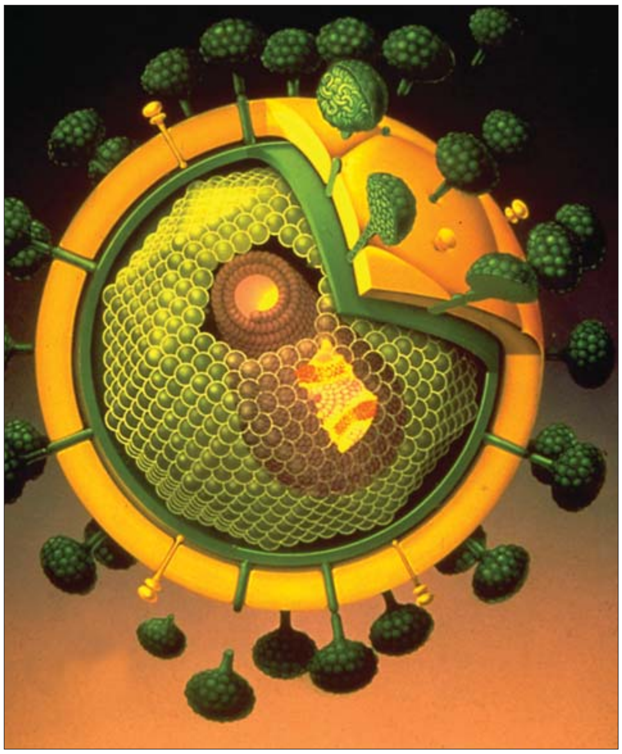

एक विकसित एचआईवी कणिका का त्रिआयामी चित्र।

एड्स महामारी ने एक सड़े हुए विशाल लट्ठे को उलटा दिया है और उसके नीचे छटपटाती सब जिंदगियों को उजागर कर दिया है, क्योंकि उसमें, हमारे अस्तित्व के मुख्य विषय, सब एकसाथ शामिल हैं : यौन, मृत्यु, सत्ता, पैसा, प्रेम, नफरत, बीमारी और खलबली मचना। वियतनाम युद्ध के बाद कोई भी घटना इतनी जबरदस्त नहीं रही है।

— एडमंड व्हाइट
अमरीकी उपन्यासकार

क्या एड्स जानलेवा है?

एड्स को डॉक्टरों द्वारा जानलेवा समझा जाता था, लेकिन आज उपलब्ध दवाइयों के साथ, ऐस अनगिनत लोग पाए गए हैं जो एड्स से बुरी तरह बीमार थे, उससे 'सामान्य अवस्था' में आ गए और एचआईवी+ होते हुए भी, काफी स्वस्थ और सक्रिय जीवन जी रहे हैं। हर वर्ष एड्स–संबंधित बीमारियों से लाखों मर जाते हैं, क्योंकि उनमें से अधिकतर को चिकित्सा सुलभ नहीं है। एक व्यक्ति में एचआईवी संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए प्रयोग की जाने वाली दवाएं मंहगी है। उनसे कई सारे दुष्प्रभाव भी होते हैं। एचआईवी तेजी से बदलता है और दी जाने वाली दवाई के रोगप्रतिकारक (ऐनटिबॉडीज़) तैयार कर लेता है।

क्या एड्स के लिए कोई उपचार है?

नहीं, एड्स के लिए कोई उपचार नहीं है। ना ही अभी कोई टीका है जो एचआईवी संक्रमण को रोक सके। एक बार जब व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो जाता है, ऐसी कोई दवा नहीं है, जो उसे हमेशा के लिए शरीर से बाहर निकाल दे। उपचार और टीके की अनुपस्थिति में, एचआईवी को फैलने से राकने का एकमात्र उपाय है, रोकथाम।

क्या एचआईवी अन्य वाइरसों से अलग है?

एचआईवी विशेषरूप से कोशिकीय प्रतिरक्षा प्रणाली के मुख्य तत्वों को निशाना बनाता है और उसे शक्तिहीन कर देता है। यह शरीर की संक्रमण से लड़ने की क्षमता को

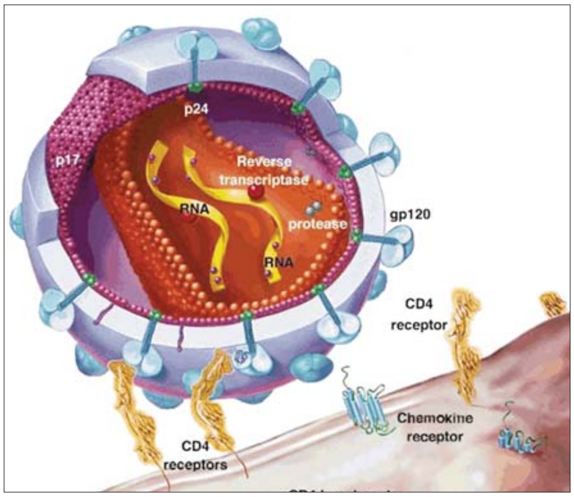

कोशिका सतह अभिग्राहकों के माध्यम से एचआईवी का चिपकना।

लगातार कम करता जाता है। चिकित्सकीय शब्दावली में, एचआईवी रेट्रोवाइरस (उलटा विषाणु) है – इसका अर्थ है कि यह अपनी आनुवांशिक सामग्री प्रतिरक्षा प्रणाली की कोशिकाओं के अंदर डाल देता है। वह इन कोशिकाओं को एचआईवी 'फैक्ट्री' में बदल देती है, उन्हें शरीर की सुरक्षा से रोकती है और साथ ही अन्य कोशिकाओं को संक्रमित करने के लिए अधिक वाइरस कणिकांए पैदा करती है। एचआईवी बहुत अधिक परिवर्तनशील वाइरस भी है, यह शरीर के अन्य भागों जैसे कि लसीका–संबंधी प्रणाली (लिंफैटिक सिस्टम) में 'छुप' जाता है और प्रतिरक्षा प्रणाली तथा दवाओं की पहुँच से बाहर मज़बूत कब्जा स्थापित कर लेता है।

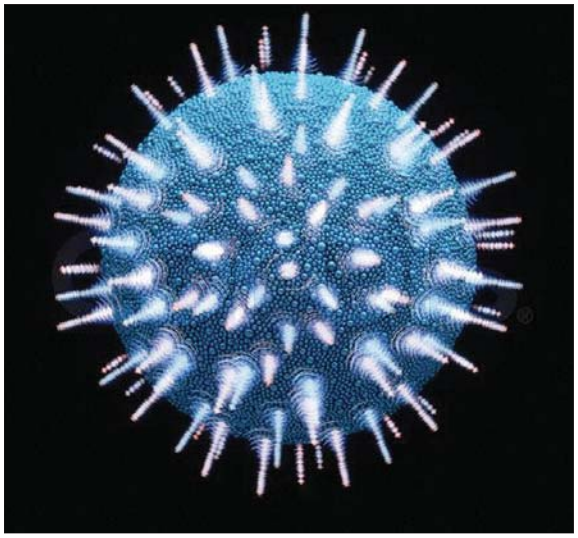

एचआईवी कोशिका का क्लोज़अप

एचआईवी कैसे संचारित होता है?

एक एचआईवी+ या सेरोपॉजिटिव व्यक्ति हमेशा के लिए संक्रमित हो जाता है और संभवतः दूसरों के लिए संक्रामक होता है। एचआईवी वीर्य, योनि स्राव, रक्त और स्तन के दूध में संचारित होता है। मुख्य रूप से संचारण निम्नलिखित तरीकों से होता है:

- संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौनिक संभोग द्वारा (कॉनड् के प्रयोग बिना);
- संक्रमित रक्त चढ़ाने या रक्त उत्पादों द्वारा;
- सुई की नोक पर संक्रमित रक्त, सिरिंज या नशे के लिए प्रयोग की जाने वाली किसी भी नोकीली वस्तु द्वारा; और
- संक्रमित माँ से शिशु को जन्म से पहले गर्भनाल (प्लेसेंटा) से, प्रसव के समय या स्तन के दूध द्वारा।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नैको) के अनुसार, भारत में, विषमलैंगिक संभोग एचआईवी प्रसार का प्रधान तरीका है – सभी एचआईवी केसों में यह 85% के लिए जिम्मेदार है।

कौन से तत्व एचआईवी संचारण को आसान बनाते हैं?

जब व्यक्ति में कोई यौनजनित संक्रमण भी हो और उसका उपचार न हुआ हो, तब यौनिक संचारण का खतरा काफी अधिक होता है। योनि संभोग की तुलना में संचारण का जोखिम गुदा संभोग में प्राप्त करने वाले साथी को कहीं अधिक होता है। उग्र यौन या बलात्कार के कारण हुए घाव एचआईवी संचारण की संभावना को बढ़ा देते हैं।

एचआईवी के आरंभिक संक्रमण के बाद, कुछ सप्ताह, रोगप्रतिकारकों के उत्पन्न होने से पहले, एचआईवी वाले लोग अपने यौन साथी के लिए अधिक संक्रामक होते हैं। संक्रमण की अंतिम अवस्था में भी वे अधिक संक्रामक होते हैं, जब प्रतिरक्षा प्रणाली वाइरस से असरदार तरीके से लड़ने के लायक नहीं रह जाती।

एचआईवी कैसे संचारित नहीं होता?

एचआईवी मानव शरीर से बाहर आसानी से जीवित नहीं रह सकता, इसलिए यह शौचालय की सीटों; आलिंगन, चुम्बन, या हाथ मिलाने जैसे स्पर्श; खाने–पीने के बर्तन प्रयोग करने से; या खांसने से संचारित नहीं होता। ना ही यह मच्छरों जैसे कीड़ों के काटने से संचारित होता है। हालांकि एचआईवी लार में पाया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है कि गहरे चुम्बन से कोई संक्रमित हुआ है। निश्चित तौर पर मौखिक यौन के कारण कोई एचआईवी संक्रमण का केस नहीं हुआ है, लेकिन यदि मुहँ में घाव या छाले हों, तो संचारण का खतरा बढ़ जाता है।

एचआईवी संक्रमण का क्रम क्या है?

एचआईवी संक्रमण निम्नलिखित विशिष्ट क्रम का अनुसरण करता है:

- पहले तीव्र संक्रमण
- लम्बे समय तक, कोई स्वाभाविक, दिखाई देने वाले लक्षण नहीं होते, हालांकि प्रयोगशाला अध्ययन रोग की निरंतर प्रगति दिखा सकते हैं
- गंभीर प्रतिरक्षा कमी, परिणाम अवसरवादी संक्रमण, जो मृत्यु का मुख्य कारण हैं।

पहली बार एचआईवी संपर्क में क्या होता है?

जब व्यक्ति पहले एचआईवी से संक्रमित होता है, गतिविधियों की हलचल मच जाती है क्योंकि वाइरस बढ़ता जाता है और प्रतिरक्षा प्रणाली रोगप्रतिकारक पैदा करके लड़ने का प्रयास करती है। इस समय के दौरान, वाइरल लोड (शरीर में वाइरस कणिकाओं की संख्या) काफी ऊँचा होता है और संक्रमित व्यक्ति बेहद संक्रामक होता है। लेकिन इस अवस्था में मानक जांच के द्वारा व्यक्ति की एचआईवी स्थिति पता नहीं लगाई जा सकती क्योंकि पर्याप्त रोगप्रतिकारक पैदा नहीं हुए होते।

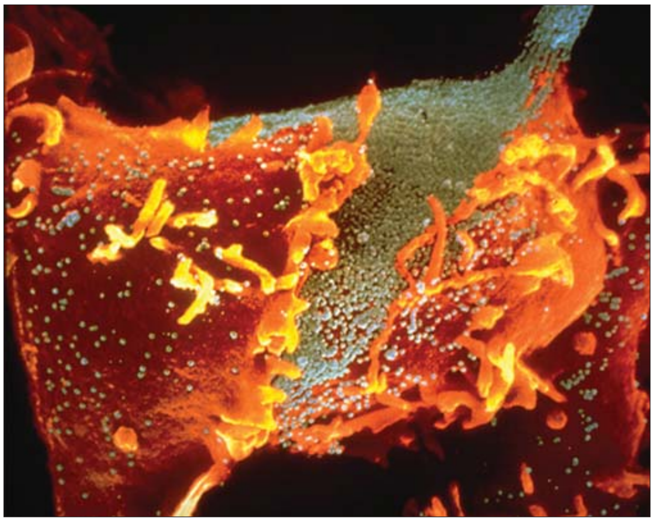

हरपीज़ वाइरस इतने जोरदार तरीके और तेजी से बढ़ते हैं कि आमतौर पर कोशिका फट जाती है। इसमें आमतौर पर तीक्ष्ण लक्षण होते है और अनदेखे नहीं रह सकते।

सामान्यतः इसे 'विंडो पीरियड' कहते हैं और यह कई सप्ताह से लेकर तीन महीने तक चल सकता है। एक संक्रमित व्यक्ति आमतौर पर विंडो पीरियड के अंत में बीमारियों के एक प्रकरण का अनुभव कर सकता है, लेकिन अक्सर यह इन्फ्लूएन्जा के साधारण संघर्ष जैसा हो सकता है, जो ध्यान दिए बगैर गुजर जाता है। लक्षणों में महीने भर या उससे ज्यादा समय तक उर्जा की कमी, बुखार और रात को पसीना और दस्त शामिल हो सकते हैं।

क्या एचआईवी अलग अलग तरह के होते हैं?

दो तरह के एक जैसे एचआईवी वाइरस होते हैं, एचआईवी–1 और एचआईवी–2। दोनों

निदान की दृष्टि से अदृश्य एड्स का कारण हैं। दोनों जिन कोशिकाओं पर आक्रमण करते हैं उन्हीं की आनुवांशिक सामग्री के प्रयोग से पुनरुत्पादन करते हैं। दोनों धीरे धीरे शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर देते हैं।

हालांकि, एचआईवी–1 के मुकाबले एचआईवी–2 कम हानिकर और संक्रामक होता है। एचआईवी–1 सारे विश्व में पाया जाता है। एचआईवी–2 अधिकतर पश्चिमी अफ्रीका में प्रचलित है, हांलाकि यह अन्य जगहों पर भी पाया गया है। एचआईवी–1 और एचआईवी–2 भारत में दोनों पाए जाते हैं, लेकिन यहां अधिक बाहुल्य एचआईवी–1, सब–टाईप सी का है।

एचआईवी का पता कैसे लगाया जाता है?

आमतौर पर रक्त में रोगप्रतिकारकों की जांच द्वारा एचआईवी का पता लगाया जाता है। वाइरस की तुलना में रोगप्रतिकारक का पता लगाना कहीं आसान (सस्ता) होता है, लेकिन यह केवल विंडों पीरियड के अंत में ही संभव होता है, जब रोगप्रतिकारक पर्याप्त मात्रा में विकसित हो गए होते है। विंडों पीरियड के दौरान एचआईवी प्रतिजन (ऐनटिजन) अर्थात स्वयं वाइरस, का पता लगाना संभव है, यदि इसी समय व्यक्ति की प्रतिजन–जांच (ऐनटिजन–टेस्टिंग) की जाए।

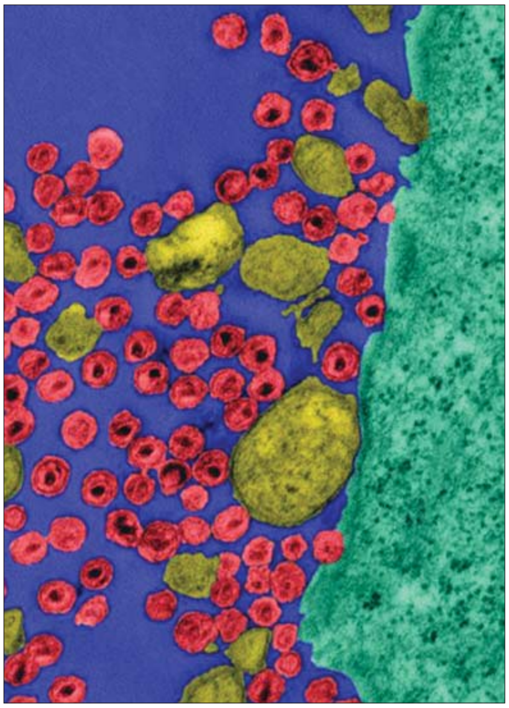

एचआईवी आक्रमणकारी कोशिकाओं की रंगीन और मैगनिफाइड छवि

एचआईवी का पता लगाने वाले टेस्ट कौन से हैं?

एचआईवी टेस्ट का आज सबसे आम तरीका है रक्त में उसके रोगप्रतिकारकों की EIA (ईआईए–एनजाइम इम्यूनोऐसे) या ELISA (एलाइज़ा–एन्ज़ाइम–लिंक्ड इम्यूनोसोरबेन्ट ऐसेय) प्रक्रिया के प्रयोग से जांच करना। क्योंकि ये 'भ्रामक पाजिटिव' परिणाम दे सकते हैं, इनके परिणामों की पुष्टि अक्सर वेस्टर्न ब्लॉट जैसे टेस्ट द्वारा की जाती है।

एचआईवी रोगप्रतिकारकों का पता लगाने के लिए रेपिड टेस्ट भी उपलब्ध हैं। ये शीघ्र परिणाम देते हैं, आमतौर पर केवल कुछ मिनटों में। अभी हाल ही में, मौखिक जांच (ये रक्त के स्थान पर लार जांचते हैं) और सेल्फ टेस्टिंग किट भी विकसित किए गए हैं।

स्वयं वाइरस और उसकी आनुवांशिक सामग्री का पता लगाने वाले टेस्ट भी हैं (भारत में जिसका प्रयोग किया जाता है, उसका नाम पौलीमिरेज चैन रिएक्शन, या पीसीआर टेस्ट है) लेकिन ये बहुत मंहगे हैं और इनके लिए काफी परिष्कृत उपकरण एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

एचआईवी संक्रमण एड्स कब बन जाता है?

औसतन, एचआईवी के संपर्क में आने वाले व्यक्ति में पहली बार संपर्क होने के बाद 8–10 वर्षों में एड्स विकसित होता है। एचआईवी लोगों की एक अल्पसंख्या, शायद 20 में से एक, 15 वर्षों तक भी एचआईवी से मुक्त रहती है। एचआईवी के साथ जन्में शिशु एड्स की ओर तेजी से बढ़ते हैं, चार महीनों बाद ही लक्षण विकसित हो जाते हैं, लेकिन अन्य लोगों में एड्स 8 या उससे अधिक वर्षों में भी विकसित नहीं होता।

क्या एचआईवी के बिना एड्स हो सकता है?

एड्स महामारी शुरू होने के बहुत समय पहले ही इम्यूनो डिफिशन्सि होने का पता लग चुका था, लेकिन यह कीमोथैरेपी लेने वाले कैंसर रोगियों, प्रतिरोपित (ट्रैन्सप्लान्ट) इम्यूनोसप्रैसिव थैरेपी लेने वाले या दुलर्भ आनुवांशिक रोगों के साथ जन्में व्यक्तियों में होने के अलावा, बहुत ही दुलर्भ था। एचआईवी संक्रमण एड्स – एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिशन्सि

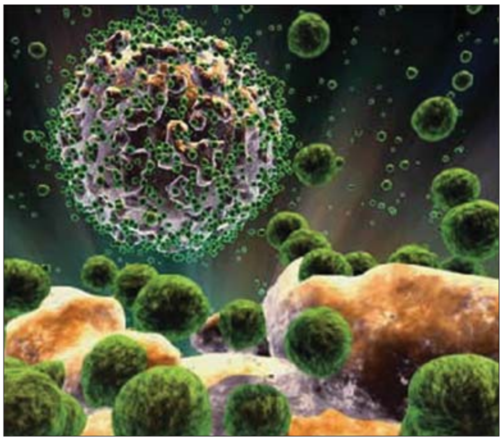

श्वेत रक्त कोशिका पर हमला करती हुए एक एचआईवी कोशिका

सिन्ड्रोम – का सबसे आम कारण है।

एड्स का पता कैसे लगाया जाता है?

अंतरराष्ट्रीय तौर पर, एड्स की शुरुआत को सीडी4 श्वेत रक्त कोशिकाओं (प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया देने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण) की संख्या 200 प्रति क्यूबिक मिलीमीटर, में कमी से निर्धारित किया जाता है।

जहां तक लक्षणों की बात है, एड्स का पता तब चलता है जब एचआईवी+ व्यक्ति में एड्स–संबंधित एक या एक से अधिक बीमारियां नजर आने लगती हैं, इनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- ग्रासनली, गले, या फेफड़ों में कैनडिडा
- इनवेसिव सरवाइकल कैंसर (आक्रामक ग्रीवा)
- हरपीज़ सिंपलेक्स वाइरस, जो त्वचा की लम्बी समस्याएं पैदा करता है
- एड्स–संबंधित एनकेफैलिपैथी (मस्तिष्क संबंधित)
- क्रानइक इनटेसटिनल डायरिया (चिरकालिक आन्त्र अतिसार)
- कापोसीस सरकोमा
- कुछ विशेष लिम्फोमास एड्स वेस्टिंग सिंड्रोम

आमतौर पर डॉक्टर एड्स का शक तब करते हैं जब रोगियों में कुछ विशेष लक्षण नजर आते हैं, संक्रमण लम्बे समय तक रहता है, और वैयक्तिक संक्रमण में दवा का असर पूरी तरह नहीं होता। उदाहरण के लिए, तपेदिक (टीबी) अपने आप लगभग हमेशा फेफड़ों के ऊपरी हिस्से में रहता है। लेकिन एचआईवी+ लोगों में, यह अक्सर सारे शरीर में फैल जाता है।

क्या एड्स के विकास को रोका जा सकता है?

नहीं, एचआईवी+ होने पर एड्स की ओर जाना डॉक्टरों के अनुसार निश्चित है। हालांकि, क्लीनिकल एड्स की शुरुआत को एंटीरेट्रोवाइरल दवाओं के प्रयोग से विलंबित किया जा सकता है।

एचआईवी/एड्स के इलाज के लिए किन दवाओं का प्रयोग किया जाता है?

एचआईवी संक्रमण से लड़ने में प्रयोग की जाने वाली दवाओं को एंटीरेट्रोवाइरल (एआरवी) के नाम से जाना जाता है और उससे होने वाले उपचार को एंटीरेट्रोवाइरल थैरेपी (एआरटी) कहा जाता है। मोटेतौर पर दवाएं पांच श्रेणियों में आती हैं:

- एनआरटीआईस (NRTIs) (न्यूक्लिओसाइड या रिवर्स ट्रैनस्क्रिप्टीज़ इनहिबइटर्स)
- एनएनआरटीआईस (NNRTIs) (नोन–न्यूक्लिओसाइड रिवर्स ट्रैनस्क्रिप्टीज़ इनहिबइटर्स)
- पीआईस (PIs) (प्रोटीज़ इनहिबइटर्स)
- न्यूक्लिओसाइड एनालॉग्स्
- यूज़न इनहिबइटर्स

सभी श्रेणियों की दवाओं को इस हिसाब से बनाया गया है कि वो शरीर के अंदर एचआईवी की पुनरुत्पादन क्षमता में दखल दें। दवा की हर श्रेणी वाइरस को विभिन्न चरणों में उसके पुनरुत्पादन चक्र से रोकती है। आजकल उपचार में विभिन्न श्रेणियों की दवाओ के मिश्रण का प्रयोग किया जाता है और इस मिश्रण थैरेपी को हार्ट (HAART) (हाइली एक्टिव एन्टीरेट्रोवाइरल थैरेपी) कहते हैं।

एड्स निश्चित रूप से मौत की ओर नहीं जाता.....लोगों को यह बात बताना बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। प्रतिरक्षा कार्य की सहायता में मनोवैज्ञानिक तत्व बहुत समीक्षात्मक होते हैं। किसी को यह कह कर कि वे मृत्यु दण्ड के योग्य हैं, यदि आप इस मनोवैज्ञानिक समर्थन को दबा देते हैं, केवल आपके शब्द ही उसे दण्ड दे देंगें।

– डॉ लुक मौनटेगनिअर
एचआईवी के खोजकर्ता

सार्वजनिक ऐकरनिम

एबीसी (**ABC**) : सुरक्षित यौन की एबीसी: परहेज (Abstinece), ईमारनदारी और सामंजस्य रखना (Being faithful & Consistent) और कॉनड्म का सही प्रयोग (Correct use of Condoms)
एआरटी (**ART**) : एंटीरेट्रोवाइरल थैरेपी
एआरवी (**ARV**) : एंटीरेट्रोवाइरल ड्रग्स

हार्ट (**HAART**): हाइली एक्टिव एन्टी–रेट्रोवाइरल थैरेपी

आईडीयू (**IDU**) : इंजेक्टिंग ड्रग यूजर (सुई से नशा करने वाले)
आईईस (**IEC**) : जानकारी (Information), शिक्षा (Education) और संचार (Communication)
आईएनपी+ (**INP+**) : इंडिया नेटवर्क ऑफ पीपल लिविंग विद एचआईवी/एड्स

एमडीजी (**MDGs**) : मिलेनियम डिवेलपमेंट गोल (मिलेनियम सम्मेलन, सितम्बर 2000 में आठ लक्ष्य निर्धारित किए गए थे, जिनमें से एक था एचआईवी/एड्स)
एमएसएम (**MSM**) : पुरुषों के साथ यौन संबंध रखने वाले पुरुष
एमटीसीटी (**MTCT**) : माँ से शिशु में संचार, इसे पीटीसीटी (PTCT) : भी कहा जाता है

नैको (**NACO**) : नेशनल एड्स कंट्रोल ऑरगेनाइजेशन
एनएसीपी (**NACP**) : नेशनल एड्स कंट्रोल प्रोग्राम
एनएआरआइ (**NARI**) : नेशनल एड्स रिसर्च इंस्टीट्यूट (पूना में)

पीएलएचए (**PLHA**) : पीपल लिविंग विद एचआईवी/एड्स
पीपीटीसीटी (**PPTCT**) : प्रीवेनशन ऑफ पैरेंट टू चाइल्ड ट्रैंसमिशन
पीटीसीटी (**PTCT**) : पैरेंट टू चाइल्ड ट्रैंसमिशन

एसटीआइ (**STI**) : यौनजनित संक्रमण (सेक्श्यूअली ट्रैंसमिटेड इनफेक्शन)
एसटीडी (**STD**) : यौनजनित रोग (सेक्श्यूअली ट्रैंसमिटेड डिजीज़)

यूएनएड्स (**UNAIDS**) : ज्वांइट यूनाइटेड नेशन्स प्रोग्राम ऑन एचआईवी/एड्स
यूएनडीपी (**UNDP**) : यूनाइटेड नेशन्स डिवलपमेंट प्रोग्राम
यूएनएफपीए (**UNFPA**) : यूनाइटेड नेशन्स पॉपयूलशन फण्ड

वीसीटी (**VCT**) : वॉलन्टरि कानउसलिंग एण्ड टेस्टिंग
वीसीटीसी (**VCTC**) : वॉलन्टरि कॉनफिडेनशियल कानउसलिंग एण्ड टेस्टिंग सेंटर

डब्ल्यूएचओ (**WHO**) : विश्व स्वास्थ्य संगठन (वर्ल्ड हैल्थ आरगेनाइजेशन)

ये दवाएं कितनी प्रभावशाली है?

कोई भी दवा एचआईवी संक्रमण को शरीर से हमेशा के लिए खत्म नहीं कर सकी। इसके बजाय उपलब्ध दवाओं का उद्देश्य होता है – प्रतिरक्षा प्रणाली को बचाना और पुनः स्थापित करना, जितना संभव हो निम्न वाइरल लोड बनाए रखना, दुष्प्रभावों और दवाओं की परस्परक्रियाओं को कम रखना और जीवनकाल बढ़ाना तथा जीवन गुणवत्ता को बनाए रखना।

अधिकतर दवाईयों की तरह, इन दवाओं के भी दुष्प्रभाव होते हैं – जैसे कि मतली या उबकाई, चकत्ते, बुखार, थकावट, उच्च कोलेस्ट्रोल स्तर, शारीरिक वसा का असंतुलित वितरण, इंसुलिन की समस्याएं, लीवर खराब होना और चिंता या उत्सुकता होना।

ये दवाएं कितने समय तक ली जानी चाहिए?

एआरवी जीवनभर ली जानी चाहिए। सही कारण है कि इलाज की बिल्कुल सही पद्धति का चुनाव करना काफी कठिन होता है। एचआईवी बहुत तेजी से विविध उत्परिवर्ती (म्यूटेंट) बना लेता है जिन पर दवा का असर नहीं होता, यदि खुराक ठीक से न ली जाए या अनियमित तरीके से ली जाए या बंद कर दी जाए। इसके परिणामस्वरूप दवा–प्रतिरोधी प्रवृत्ति फिर उससे भी बड़ा खतरा होता है।

क्या एंटीरेट्रोवाइरल भारत में उपलब्ध हैं?

हाँ बिल्कुल, भारतीय दवा कम्पनियां, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका समेत विश्व के कई भागों में एआरवी की आपूर्ति करती हैं।

एड्स सावधानी स्टिकर लगी टेस्ट ट्यूब

जब इन कम्पनियों ने बाज़ार में प्रवेश किया, उन्होंनें अंतरराष्ट्रीय प्रचलित कीमतों से 2–5% पर दवाएं बेचीं।

भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के माध्यम से मुफ्त एआरवी चिकित्सा सीमित रूप में उपलब्ध हो रही है। सरकार एआरवी की पहुँच को व्यापक बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। 2006 में दवाओं की 'पहली श्रेणी' की कीमत 1000 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह थी।

भारत में, पोस्ट–एक्पोजर प्रोफाइलैकसिस (पीईपी) आमतौर पर केवल डॉक्टरों और नर्सों को उपलब्ध होता है जिन्हें चिकित्यकीय परिस्थिति में एचआईवी का खतरा हुआ हो। अन्य देशों में, कभी कभी पीईपी गैर–चिकित्सकीय व्यक्तियों को भी उपलब्ध होता है। संक्रमण का शक होने के 72 घंटों के अंदर पीईपी शुरू किया जाना चाहिए और यह एचआईवी संक्रमण के विरुद्ध प्रभावशाली है।

क्या कोई एचआईवी/एड्स टीके हैं?

एचआईवी संक्रमण को रोकने के लिए प्रोफाइलैकटिक और संक्रमित लोगों में प्रतिरक्षा प्रणाली को लगातार क्षति से रोकने या धीमा करने के लिए चिकित्सीय, दोनों के लिए सफल टीके बनने के ऊपर कई सारी उम्मीदें टिकी हैं। लेकिन बड़े वैज्ञानिकों का कहना है कि एचआईवी टीके के लिए विश्व को और 15 वर्ष इंतजार करना पड़ सकता है।

एचआईवी के विरुद्ध टीका ढूँढना मुश्किल है। वैज्ञानिकों को अभी तक यह पता नहीं है, कि यदि उन्हें लोगों को संक्रमण से सुरक्षा देने वाला टीका बनाना है तो प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया के लिए शरीर के कौन से भागों की नकल करना महत्वपूर्ण है। वाइरस की एक प्रवृत्ति पर आधारित टीका शायद लोगों को

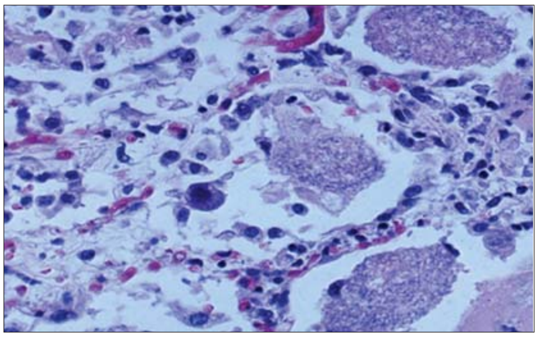

साइटोमैगालिक सेल का एक बड़ा चित्र

अन्य प्रवृत्तियों के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान न करे, और विश्वभर में कई अलग अलग तरह की प्रवृत्तियां चक्कर लगा रही हैं।

क्या भारत में एचआईवी/एड्स टीके विकसित किए जा रहे हैं?

नहीं, लेकिन फरवरी 2005 में, भारत सरकार ने अंतराष्ट्रीय एड्स वैक्सीन इनीशिएटिव (आईएवीआई) के सहयोग से, यूएसए में विकसित tgAAC09 टीके के लिए मानव अध्ययन विषयों पर क्लीकनल ट्रायल का पहला फेज आरंभ कर दिया है। टीके का पहला फेज मानव ट्रायल का पहला चरण है और इसका प्राथमिक उद्देश्य सुरक्षा का मूल्यांकन करना है। यूएसए, यूरोप और अफ्रीका में मानव ट्रायल पहले ही किए जा चुके हैं, लेकिन वाइरस की परिवर्तनशीलता ने सफल टीके की खोज को बाधित किया है।